अभिमन्यु-वध

—:०:—

व्रज-भाषा

खंड-काव्य

———

रचयिता

श्रीयुत् पं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

प्रकाशक

राय साहब रामदयाल अगरवाला

निवेदन

भगवान् वेद व्यास-विरचित परम पवित्र एवं प्रशस्त महाभारत का पाठ जिस समय हमारे पूज्यपाद पिता जी, आजसे दो वर्ष पूर्व, करते थे और मुझे उसके सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तो एक दिन अभिमन्यु के कथा-प्रसग को सुनकर मेरे मन मे सहसा ही अभिमन्यु पर कुछ लिखने का विचार उत्पन्न हुआ और उसी रात्रि को सोने के पूर्व तीन छन्द —न० १७, ३४ और १२९ बन गये।

सबसे प्रथम मैंने इन्हे पूज्य श्री० 'रसाल' जी के सम्मुख रक्खा। उन्होने दो छन्द और लिखकर एक "अभिमन्यु-पचक" बनाने के लिये कहा। इसके कुछ ही दिन पश्चात् श्री० 'रत्नाकर' जी प्रयाग आये और हमे उनका भी इन कवित्तो के सुनाने का अवसर मिला। उन्होने हमसे अभिमन्यु-वध की पूर्ण कथा लिखने के लिये कहा। अस्तु, जब जब हमे अवकाश मिलता गया हम दो-दो तीन-तीन छन्द इस प्रसग के लिखते गये। जब "हिन्दी-साहित्य के इतिहास" की देखभाल का कार्य हमे करना पडा तब इसकी गति स्थगित हो गई और उसके प्रकाशित हो चुकने पर ही इसकी रचना का कार्य पुन प्रारम्भ हो सका।

इसी बीच मे हमने अपने कुछ छन्द स्थानीय रसिक-मडल के अधिवेशनो मे सुनाये, जिन्हें सुन कर श्रीयुत् डाक्टर रामप्रसाद

जी त्रिपाठी, प० देवी दत्त जी शुक्ल, स० 'सरस्वती', एवं अन्य महा
भावो ने हमसे इस पुस्तक को शीघ्र समाप्त करके छपवाने
अनुरोध किया। किन्तु हमने "काव्य-मीमांसा" नामक पुस्तक
लिखना प्रारम्भ कर दिया था, जिसके समाप्त हो कर प्रकाशित
होने मे लगभग चार पाँच महीने लग गये अस्तु इस पुस्तक का
कार्य्य फिर ज्यो का त्यो ही पड़ा रह गया।

अब इस नवीन वर्ष के प्रारम्भ मे इसका छपना भी प्रारम्भ
हुआ और आज ईश्वरानुकम्पा से यह पुस्तक आप लोगो के सम्मुख
उपस्थित हो सकी। आशा है कि यह आप लोगों का कुछ मनो
रंजन कर सकेगी।

हमारे कतिपय मित्रो ने हमसे इस बात का भी आग्रह किया
कि इसके पीछे एक छोटी सी शब्दार्थ-सूची भी जोड दी जाय
अतएव उनकी इच्छानुसार परिशिष्ट रूप में आवश्यक शब्दो की
सूची अकारादि क्रमानुसार तैयार करके जोड दी गयी है जिससे
आशा है हमारे नवयुवक-विद्यार्थियो को पर्याप्त सुविधा होगी।

इस कथानक के इतिवृत्त को महाभारत के ही अनुसार
चलाने का प्रयत्न किया गया है, जहाँ कल्पना से भी काम लिया
गया है वहाँ भी घटनाओ की तथ्यता पर ध्यान रखते हुए उसे
यथोचित मर्यादा और सीमा के ही अन्दर रक्खा गया है, और
अनीप्सित स्वच्छंदता नही दी गयी।

इसकी भाषा मे साहित्यिक व्रजभाषा की एक रूपता का
स्थिरता से पालन करने का प्रयत्न किया गया है और
यथासम्भव प्रान्तिक-प्रयोगो को दूर ही रक्खा गया है

जिससे भाषा की शुद्धता को किसी प्रकार के विकार से बाधा न पहुँच सके।

अन्त मे हम धन्यवाद देते है अपने उन मित्रो और महानुभावो को जिनके अनुरोध ने हमे इसे लिखने को प्रेरित किया और साथ ही साधुवाद देते है राय साहब लाला रामदयाल अगरवाला को जिन्होने इसे बडी तत्परता से प्रकाशित कर काव्य-प्रेमियो के सन्मुख उपस्थित करने का हमे अवसर दिया है।

"रमेश-भवन"
प्रयाग।
१२—१—३२

विनीत
—रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

* ओ३म् *

मङ्गलाचरण

—(०).—

लीन्हैं छत्र चँवर सदाई संग राजै जय,
　　　　विजय विराजै जौ पराजय हर्‌यौ करै ।
'सरस' बखानै, मंजु मुख-मुसकानि, कानि,
　　　　कलित कृपा की वानि कलुख दर्‌यौ करै ॥
दुति दसनावलि की दीपति दिगन्तनि लौं,
　　　　बिपति-घनाली कौ घनौ तम गर्‌यौ करै ।
वीर-बर पारथ महारथ कौ सारथ सो,
　　　　सारथ हमारौ पुरुषारथ कर्‌यौ करै ॥

❀　　❀　　❀

अभिमन्यु-वध

—·—‡§‡—·—

[१]

दिन दिन दूनी देखि विजय विपच्छिनि की,
नृप दुरजोधन की मति विकलानी है।
'सरस' बखानै, सल्य-करन-दुसासन त्यों,
सकुनी असकुनी पैं जाइ यौं बखानी है॥
सूझत न एकौ अङ्क, रङ्क मति मैं उपाय,
विथकित हाय! ह्वै अनीहूँ अकुलानी है।
भीषम गये औ द्रौन मौन से भये हैं अब,
तुम सबहूँ कैं होत, होति हित-हानी है॥

[२]

कहत दुसासन उसाँसनि सँभारि यहै,
जीतौ जाय भीम जौ असीम वलखानी है।
'सरस' बखानै, कहै करन धनञ्जय कैं,
जीतैं जय, किन्तु कहै सकुनि प्रमानी है॥
धरम-सपूत ही विचारियै विधायक त्यौं,
नायक अनी कौ अवनी कौ भटमानी है।
काहू भाँति नीति कै अनीति छल-बल हू कै,
लीजै ताहि बाँधि यौं सबै कैं मनमानी है॥

[३]

दौन-ढिग आय सबै कीन्हीं मिलि मत्रना यौं,
याही एक यत्रना दियै तैं पार परिहै।
'सरस' बखानै, त्यौं प्रचारि रन पारथ सौं,
कोऊ महारथ और ठौर जाय भिरिहै॥
जानत न भेदिबे कौ भेद कोऊ ऐसौ एक,
चक्रव्यूह कै अव्यूह द्रौन जुद्ध करिहै।
तामैं फेरि घेरि कै अजीत पांडु-पूतन कौं,
जीति कै हमारौ विजै-सख व्यौम भरिहै॥

[४]

वादि बकवाद कै विवाद ना वढायौ पुनि ,
एक ही दृढायौ यहै कीवौ ठीक ठायौ है ।
'सरस' वखानै , कै विसर्जित समाज वेगि ,
ताज दै गुरू कौ कुरुराज फिरि आयौ है ॥
होत पुनि प्रात सबै साज साजि तैसौ इत ,
सप्तक सौं पारथ कौं टेरि अरुझायौ है ।
उत विरचाय सुदुरूह व्यूह द्रौन-द्वारा ,
दूत कौ बुझाय धर्मराज पैं पठायौ है ॥

[५]

जै जै धर्मराज ! राज-वंस-अवतंस-हस !
नैसुक हमारी इती कान करि लीजियै ।
'सरस' वखानै , यौं प्रमानै कुरु-राज-दूत ,
डर कौ सवैई छल-छूत दूरि कीजियै ॥
कीजै या दुरन्त रनहूँ कौ अन्त एकै करि ,
टेकै धरि सैन कौ न लोहू और छीजियै ।
कै तो चक्रव्यूह भेदि लीजै जय गौरव सौं ,
कौरव कौं कै तौ जय-लेख लिखि दीजियै ॥

[६]

दीजै जाय उत्तर हमारौ दुरजोधन कौं,
पथ परिसोधन कौ हमकौं दिखैहै को ?
'सरस' बखानैं, यौं प्रमानैं धर्मराज धीर,
बीर विजयी जौ, तिन्हैं हारिबौ सिखैहै को ??
चक्रधर जोगीस्वर चक्र-भेद-दच्छ जाकैं,
पच्छ माहिं, ताकौं कै कुचक्र बिलखैहै को ?
जौलौं जै-बिजै के ईस कीन्हैं छत्र-छाया सीस,
तौलौं जय-पत्र कहौ हम सौं लिखैहै को ??

[७]

एहो दूत! पाण्डु-पूत बीर बिग्रही ह्वै पंच,
रंच ही मैं विग्रही प्रपच-सत हरि हैं।
जौलौं धर्म-धूम तौलौं मसक करैंगे कहा ?
नर-हरि-ओर कहा ससक निहरि हैं ??
सक्र-मदहारी चक्रधारी जौ हमारी ओर,
ह्वै कै रखवारे चक्रधारे नित्त हरि हैं।
ऐसौ तौ कुचक्र रच्यौ एकै चक्रव्यूह कहा,
कोटि चक्रव्यूह सौं न पाडु-पूत हरि हैं॥

[८]

कुरुपति दूत पाय उत्तर सिधाये उत,
चिन्ता धर्मराज कै हियै यौं इत व्यापी है।
'सरस' बखानै, अनुमानी न परिस्थिति त्यौं,
इस्थिति न जानी गुरुता की छाप छापी है॥
कहत कही तौ, सही ह्वैहै यह कैसैं हाय!
जाकैं बल भूलि कही, दूरि सो प्रतापी है।
जैहै हाय! नाक ना कही मैं त्यौं नसैहै हाँक,
धाँकहू न रैहै सत्यता की जाहि थापी है॥

[९]

आँस भरि आँखिनि उसाँस भरि धर्मराज,
माथ धरि हाथ रहे साँस भरि उद्र मैं।
'सरस' बखानै, उर जानै कहा सोचि कह्यौ,
सत्य-बल ह्वैहै छय हा! हा! छल-छुद्र मैं॥
कृष्ण-कर्नधार-सग पारथ अकारथ ही,
धायौ नाम-नौका-हित उत रन-रुद्र मैं।
हाय! हरुओ ह्वै इत लाज कौ जहाज आज,
डूबत दुरूह चक्रव्यूह कैं समुद्र मैं॥

[१०]

सुनि-गुनि ऐसी धर्मराज की, अनैसी लेखि,
देखि रहे सकल सभा के भकुवाये से।
'सरस' बखानै, धीर द्रुपद विराट वीर,
सत्यकी असत्य की विजै पै भे चकाये से॥
चित्र-लिखे मानौ सहदेव औ नकुल रहे,
प्रबल असीम भीम अबल अचाये से।
हिम्मत हरास ह्वै हतास हिय हारि रहे,
सोचत उदास उत्तरेस हू सकाये से॥

[११]

आई व्यूह-भेदन-क्रिया की सुधि ज्यों ही किन्तु,
गर्भ माँहि अर्भक-दसा की बुधि जागी है।
'सरस' कहै, त्यों सव्यसाँची-सुत-आनन पै,
औरै ओप आई जो कछूक कोप-पागी है॥
नयन-सरोजनि मैं आयो नयौ रग अग-
ओजनि समायो, चित्त-चिन्ता सब भागी है।
थरकन लागी रद-कोर कुटिलौं हैं दोय,
भौं हैं दोय, वीर-बाहु फरकन लागी है॥

[१२]

उमँगि समन्यु अभिमन्यु बीर बोल्यौ तात !
होहु ना अधीर, भीरि यह दरि दैहौं मैं।
'सरस' बखानै चक्रव्यूह कौ कुचक्र भेदि,
चक्रधर-सिच्छा की समिच्छा करि लैहौं मैं ॥
दुष्ट दुरजोधन, दुसासनादि कौरव कौ,
गौरव-गुमान ह्वै सरुष्ट गरि दैहौं मैं।
राखि रजपूती, बैठि रावरे कृपा-रथ पैं,
पारथ की सारथ सपूती करि ऐहौं मैं ॥

[१३]

सुनि अभिमन्यु की उमग भरी बानी वर,
वीर भये दंग रग औरै अग चढ़िगो।
'सरस' बखानै, किन्तु धर्मराज ह्वै प्रसन्न,
सन्न ह्वै रहे त्यों द्विविधा सौं मन मढिगो ॥
चाहत सराहत हियैं मैं बाल-पन लेखि,
बालपन देखि हाँ, नहीं, कछू न कढिगो।
त्यौं ही भीम भाखे तात ! माखे मन काहे, सुनौ,
व्यूह है हमारौ, जौ दुलारौ बीर बढ़िगो ॥

[१४]

दीजै वेगि आयसु अनीहूँ चलै जै जै टेरि,
हाँ, हाँ, करि बोले सबै याही चित्त ठावैं हम।
'सरस' बखानै, कह्यौ धर्मराज साधु! सुनौ,
जो कही सही सौ, क्यौं त ऐसौ पै बनावैं हम॥
आवन न दीजै आँच यापैं मिलि कीजै पाँच,
काँचौ काँच जैसौ निज लाल तौ पठावैं हम।
हाँ, हाँ, कै सबै गे उत, उत्तरेस बोल्यौ इत,
साजौ सूत! स्यंदन, विदा लै अबै आवैं हम॥

[१५]

उठत करेजौ अनायास आजु काँपि काँपि,
चाँपि चाँपि चिन्ता उठै चित्त मैं अजानी सी।
'सरस' बखानै, कहै उत्तरा न जानै सखि!
काहे लखि भौन मौन उठति गलानी सी॥
रहि रहि नैन दाहिनोई फरकै है अरु,
छाती धरकै है भूरि भीति मैं समानी सी।
हैहै आजु कैसी धौं अनैसी हे विधाता! हाय!
भावना अनैसी आय व्यापति अठानी सी॥

[१६]

पारथ-कुमार सुकुमार उत्तरा पैं आय,

मॉगी त्यौं विदाई वीर-बानक बनाई है।

'सरस' बखानै, अनुमानै है तहॉ की समा,

सोचि सुखमा सौ उर उपमा उराई है॥

असुरनि-सग रन-रंग रचिवै कौं विदा,

मॉगत सची सौं ज्यौं सचीस सुर-राई है।

पाय अमरेस कौ निदेस रुद्र-रन हेत,

लेत रति-नाथ कैधौं रति सौं विदाई है॥

[१७]

राजैं हैं किरीट मनि-मडित-मुकुट सीस,

कचन कैं कुडल विराजैं श्रुति-वर मैं।

'सरस' बखानै, अभिमन्यु कैं छपाकर लौं,

सवल-सनाह सजी दीपै देह भर मैं॥

राखति कृपा न जौ कृपान पानि राजै एक,

छाजैं बर-बान मनौ भानु-कर कर मैं।

कंध पैं कमान मान वैरिनि कौ भग करै,

दंग करै देखत निखग परिकर मैं॥

[१८]

रासि रस राज की विराजि रही मूरति पैं,
मुद्रा मुख हास कैं बिलास की ढरी परै।
'सरस' बखानैं, करुना की छाँह कोयनि मैं,
लोयनि मैं लाली रुद्रता की उतरी परै॥
वक्र भृकुटीनि मैं भयानकता खेलै भूरि,
अद्भुत आभा सान्त-भाव सौं झरी परै।
उर उभरी सी परै वीर रस की तरङ्ग,
अंग प्रति अग सौं उमङ्ग उछरी परै॥

[१९]

पेखि उत्तरा कौं मौन बोल्यौ अभिमन्यु बीर,
कठिन समस्या एक एकाएक आई है।
उत अरुझे हैं पितु-मातुल हमारैं, इत-
व्यूह रचि द्रौन जीतिबे की घात लाई है॥
जानत न ताको कोऊ भेद, खेद आनैं सबै,
हौं ही एक जानौं पितु गर्भ मैं सिखाई है।
यातैं बेगि दीजै बिदा सारथ सपूती करौं,
नातरु नसैहै सबै, जो बनी बनाई है॥

[२०]

लखि निज नाथ-नैन रक्त, वर बैन व्यक्त,
सुनि-गुनि बीरि-वधू उत्तरा सकाई है।
त्यौं ही कर्न-द्रौन-दुरजोधन से जोधन की,
दारुन लराई चित्त चित्रित लखाई है॥
देखि सौम्य सूरति विसूरति त्यौं जुद्ध-दृस्य,
इत उत हेरै सुधि-बुधि विकलाई है।
मगल-अमगल कैं परि असमंजस मैं,
हाँ न करि आई औ नहीं न करि आई है॥

[२१]

वस धरि धीर बीर नृपति विराट-सुता,
पच दीप आरती उतारन जवै लगी।
'सरस' वखानै, पैठि वैठि उर-अतर मैं,
औरै कछू भारती उचारन तवै लगी॥
कपित सी ह्वै कै भई झपित सी दीप-सिखा,
वाम ओर औचकि सधूम ह्वै दवै लगी।
चकि, जकि, थहरि थिरानी यौं अनैसी लेखि,
देखि मुख, ध्यावन त्यौं सुरनि सवै लगी॥

[२२]

जै जै आर्जपूत ! पुरहूत आदि छाया-करैं,
दाया करैं श्रीहरि हरैं जे सूल गाढ़े हैं।
'सरस' बखानै, उत्तरा यौं सुभ-आसिख दै,
तिलक सुभाल पैं कितेक बार काढ़े हैं॥
करत पयान लै दिखाई मांगलीक-वस्तु,
वोली "सुभमस्तु" नैन नेह-आँस बाढ़े हैं।
चूमि कर-पल्लव लगाय उर उत्तरेस,
आय द्वार देख्यौ सूत स्यन्दन लै ठाढ़े हैं॥

[२३]

एहो ! बीर सारथी ! चलौ तौ 'जै मुरारि' बोलि,
रारि मोल और अब रंचक न लैहौं मैं।
'सरस' बखानै, त्यौं पुरानौ सबै लेखा लेखि,
दैहौं हाथ खोलि कछू बादि ना करैहौं मैं॥
सब कैं समच्छ लच्छ बाँधि कोटि जोरि जोरि,
धनु लै समूल चक्र-ब्याज-दरि दैहौं मैं।
काल नियरायौ है, निधन करि वैरिन कौं,
रिन कौं निबेरि त्यौं अबेर ही चुकैहौं मैं॥

[२४]

जै जै पूज्य-पारथ-सपूत ! सुनौ, बोल्यौ सूत,
रावरो रजायसु हमारैं सिर-माथ हैं।
द्रौन रन-पडित अखंडित-प्रताप-दाप,
कूट-नीति-मडित प्रतापी कुरु-नाथ हैं॥
बीर-व्रतधारी साहसी ह्वै चाप-धारी आप,
वैस सुकुमारी, काज भारी लिये हाथ हैं।
'सरस' बखानै, करैं किन्तु औ परन्तु यातैं,
जानत हूँ साथ मैं अनाथनि के नाथ हैं॥

[२५]

मम प्रति प्रेम औ कृपा को रावरौ जौ भाव,
चाव चित्त सूतजू ! सदा सो सरस्यौ करै।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै है सुभद्रानंद,
सोई मुख-चद सुधा-बैन बरस्यौ करै॥
लेखत अबै लौं सुकुमार हमैं आये अरु,
देखत कुमार-रूप हिय हरस्यौ करै।
यातैं तुम बीरता न धीरता हमारी लखौ,
साँची कहैं जैसौ भाव तैसौ दरस्यौ करै॥

[२६]

राघव-कुमार लव-कुस के चरित्र चारु,
नैसुक पवित्र हे सुमित्र! चित्त आनियै।
'सरस' बखानै, राम-लखन कुमारनि की,
बीरतादि बालमीकि-ग्रंथ सौं बखानियै॥
मृग-पति सावक कौं जैसै गजराज-जोग,
जग-जन मानैं त्यौं हमैं हूँ आप मानियै।
बैस माँहि जानियै भले ही हमैं ऊन किन्तु,
न्यून और काहू माँहि काहू सौं न जानियै॥

[२७]

हम सुनि राखी सत्य-भाखी मुख साखी यह,
यह जग-जाल पंच भौतिक प्रपंच है।
'सरस' बखानै, त्यौं इहाँ कौ सबै कारबार,
सार-हीन बात मैं बनायौ मनौं मंच है॥
तन मन सारौ छन हीं मैं छय होनवारौ,
इन सब मैं तौ सत्व हीन तत्व पंच है।
राखत जय-श्री कौ उछाह जस-देह-चाह,
और परवाह बीर राखत न रंच है॥

[२८]

निज अभिमान, मान औ गुमान हूँ की हम,
सूत जू ! अपूत छल-छूत की बखानैं ना।
'सरस' कहै, त्यौं कुल-कानि आनि ही की कहैं,
साँची कहैं हाँ की हो, स्वभाव की प्रमानैं ना॥
अतुल बली जौ तात-मातुल प्रचारैं क्रुद्ध,
तौहूँ जुद्ध जोरैं हम खेद मन आनैं ना।
द्रौन, कृप, कर्न, कृतवर्म, कुरुराज कहा,
हम जमराज के बबा सौं भीति मानैं ना॥

[२९]

पुनि अभिमन्यु कह्यो, देखो सूत ! वैरिन सौं,
'त्राहि त्राहि पारथ सपूत' यों कढ़ैहौं मैं।
'सरस' बखानै, आजु देखत अखंडल कैं,
बंस-महिमा सौं महि-मंडल मढ़ैहौं मैं॥
छाँटि भट-भीरनि कौं काल-कुंड पाटि-पाटि,
काटि-काटि मुंड मुंडमाली पैं चढ़ैहौं मैं।
तीरनि के पिंजर मैं बमकत बीरनि कौं,
कीरनि लौं आनि राम राम ही पढ़ैहौं मैं॥

[३०]

खलबल भारी खल-बल मैं मचैगो जब,

बानिनि की बिकट घनाली घिरि जायगी।

'सरस' बखानै, यौं प्रमानै अभिमन्यु वीर,

परि रथ चाल भानुहूँ की थिरि जायगी॥

हलचल ह्वैहै अचला कौ चलकारी इमि,

जातैं फनि-पति की फनाली फिरि जायगी।

काया जुद्ध-भूमि माँहि यह गिरि जायगी कै,

आज धर्मराज की दुहाई फिरि जायगी॥

[३१]

करत मनोरथ यों रथ पैं सुभद्रा-सुत,

वीर-रस कैसौ अवतार नयौ साजै है।

'सरस' बखानै, सग सैन सूर-वीरनि की,

ताकैं ज्यौं विभाव-भाव लै प्रभाव राजै है॥

आयौ पास समर-थली कैं रथ माँहि वली,

चौंकि रिपु-सैन चली सोचि भानु भ्राजै है।

लखि अभिमन्यु कौं जितै के ते तितै के रहे,

चकित चितै कै रहे सोचि को विराजै है॥

[३२]

पेखि अभिमन्यु कौं समन्यु कहै कोऊ यह,

गेय कार्तिकेय कौ अजेय अवतार है।

मूरति बिलोकि सौम्य 'सरस' प्रमानै कोऊ,

ओज-भरौ साँचौ यह मार-सुकुमार है॥

गौरव बिचारि कहै कोऊ यह कौरव कौ,

'प्रगट्यौ पराभव भयङ्कर अपार है।

कोऊ त्यौं बखानै, अभिमन्यु बेप-धारी जिष्णु,

विष्णु सेस-सायी बन्यौ पारथ-कुमार है॥

[३३]

कहत दुसासन सँभारि कै उसाँसन हूँ,

यह तौ त्रिविक्रम कौ विक्रम बिसाल है।

'सरस' बखानै, आय करन प्रमानै यह,

कैतौ जामदग्नि, अग्निदेव कै कराल है॥

सोचत जयद्रथ महद्रथ, भयङ्कर ह्वै,

आयौ प्रलयङ्कर त्रिसूली महाकाल है।

बोले द्रौन बिहँसि, हमारे सिष्य पारथ कौ,

कौसल कृतारथ लड़ैतौ यह लाल है॥

[३४]

सुवरन-स्यंदन पैं सैलजा-सुनंदन लौं,
सुभट सुभद्रा-सुत ठमकत आवै है।
'सरस' बखानैं, कर वीर वास पूरौ कियें,
श्रीहरि सिँगार-रस गमकत आवै है॥
कैधौं दिव्य-दाम अभिराम आफताव-आव,
दाव तम तोम-ताव तमकत आवै है।
दमकत आवै चारु चोखौ मुख-मंद हास,
करें वर चंद्रहास चमकत आवै है॥

[३५]

पारथ-कुमार! सुकुमार मार हूँ तें तुम,
'सरस' सलोनी वैस सोभा सरसाये हौ।
यह अनुहारि कौं निहारि अनुमानैं हम,
मानैं मृगया कौं चलि भूलि इत आये हौ॥
कहत जयद्रथ, अयान यह जानैं कहा,
तुम तौ सयान, सूत! यान किमि लाये हौ।
निठुर युधिष्ठिर के आये धौं पठाये इन,
ठाये चित कैंसौ हित अहित भुलाये हौ॥

[३६]

नृपति जयद्रथ ! महद्रथ गुमानी सुनौ,
बिनु छल-सानी यह जैसी कछू भाखौं मैं।
'सरस' बखानै, यों प्रमानै अभिमन्यु आन,
ध्यान कै तिहारो छल छिद्र मन माखौं मैं॥
जा मुख सौं बालक बताय हँसै ता मुख कौं,
कन्दुक कै वीर-बाल ह्वैबौ अभिलाखौं मैं।
जासौं किन्तु मीच नीच ! रावरी लिखी है ताही,
पूज्य पितु-बान हेत तेरो सीस राखौं मैं॥

[३७]

सुनि कटु बैन यों जयद्रथ रिसौंहैं हेरि,
भौंहैं फेरि दीन्ह्यौ वेगि हाथ धनु-सर मैं।
'सरस' बखानै, कह्यो मूरख न मानै जु पै,
जानैगो हमैं तौ जबै जैहै जम-घर मैं॥
याकौं कै सुनी औ असुनी सी उत्तरेस तौलौं,
ताकि तीर तमकि पँवारे हरबर मैं।
दोख्यौ दाहिने मैं सिंधुराज कैं समूचौ धनु,
ऊँचौ उठि आयौ किन्तु आधौ वाम कर मैं॥

[४०]

राघव-समान हाथ-लाघव बिलोकि तासु,
सिंधुराज चाहि औ सराहि हियैं रहिगे।
'सरस' बखानै, धनु टूटे, भये ऐसे त्रस्त,
अस्त्र सस्त्र एक हूँ न क्यौं हूँ कर गहिगे॥
राजनि की ओर हेरि लाजनि समाये जौलौं,
भौचकि भुराये देखि कौतुक यौं ठहिगे।
तौलौं उत्तरेस के अमोघ बर बाननि सौं,
चक्रव्यूह-द्वार के महान खंभ ढहिगे॥

[४१]

भंग भयौ देख्यौ द्वार, लेख्यौ अभिमन्यु-रंग,
दंग औ हतास ह्वै जयद्रथ लजाये हैं।
'सरस' बखानै, 'धन्य पारथ-सपूत! धन्य!,'
'जै जै धर्मराज' टेरि भीमादिक धाये हैं॥
सिव-वर सोचि सिंधुराज त्यौं उठाय माथ,
"जै जै भूतनाथ" कहि बान बरसाये हैं।
दहि-दहि पांडव ह्वै खांडव कैं रूप रहे,
सूख रहे कै-कै सत्र पै न पैठि पाये हैं॥

[४२]

बढ़त बिलोकि वीर बालक कौं व्यूह माँहि,
कौरव-अनी के वीर नीके जुटि-जुटिगे।
'सरस' बखानै, अस्त्र-सस्त्र बहु भाँतिन कै,
तिनकै अनेक नेक ही मैं छुटि छुटिगे॥
छूटत छुटे पै उत्तरेस-तीर-तीखन सौं,
भीखन वै बीचै टूक टूक टुटि टुटिगे।
देखत ही देखत कितेक निधनी के धन,
राजनि के रतन-रँगीले लुटि-लुटिगे॥

[४३]

निज प्रिय पारथ कौ सुघर सपूत पेखि,
गुरुबर द्रौन-उर प्रेम उमँगायौ है।
'सरस' बखानै, मूलहू तैं ब्याज प्यारौ होत,
सोई चाव-भाव आय आँखिनि पुरायौ है॥
हिय हुलस्यौ त्यौं मुख चूमि अंक आनिबै कौं,
औसर कौ ध्यान आन बिबस बनायौ है।
कीन्हौ ज्यौं सराहि चाहि आसिख उचारन कौं,
गर गरुवायौ, बोलि बचन न आयौ है॥

[४४]

बिवस बिलोकि चित-चाहो करिबै मैं इमि,
द्रौन निरुपाय ह्वै निहारि नैंकु नहिगे।
'सरस' बखानै, परी मद सी अनीठि-दीठि,
प्रेमानद-आँसुनि सौं लोचन उमहिगे॥
सुमति भुलानो कर-अकर दुमारग मैं,
प्रान प्रीति और नीति जालनि उलहिगे।
कर धनु ताने द्रौन मोचत न बात मौन,
औचकि भुराये भूलि भौचकि से रहिगे॥

[४५]

सुभट सुभद्रा कौ सपूत तबलौं ही धाय,
मृदु मुसुकाय भाय प्रगटि दिखाये हैं।
'सरस' बखानै, बीर व्यौम-बीच बाननि सौं,
'श्रीगुरु-प्रनाम'-अंक अंकित कराये हैं॥
पुनि सर-सुमन सँवारि कल-कौसल कै,
पचसर के से पंच सर यौं पठाये हैं।
एक करि घात रंच, द्वै त्यौं पद पूजि परे,
सेस रज पावन की पावन लै आये हैं॥

[४६]

कौसल लखे जौ भई द्रौन कौं प्रसन्नता सो,
चाहिबौ बिहाय और रोचनि न देति है।
'सरस' कहै, त्यौं आनि कानि करुना की सौंहैं,
होन तिरछौंहैं कछू लोचनि न देति है॥
ह्वै पुनि सक्रुद्ध जुद्ध जोरिबे को बात कहा,
गात ओखिबे को घात सोचनि न देति है।
कायर कहैबे की त्रपा जौ लै गहावै धनु,
बानि तौ कृपा की बान मोचनि न देति है॥

[४७]

करि सब भाव लोप औरै चित चोप चढ्यौ,
औरै कोप-ओप सौं मुखारबिन्द मढ़िगो।
'सरस' कहै, त्यौं अभिमन्यु-अंग-अंगनि पै,
जंग की उमंगनि लै रौद्र-रंग चढिगो॥
संकर महान प्रलयङ्कर पै ज्यौं मनोज,
ओज आनि द्रौन पै त्यौं तानि बान बढिगो।
'जै जै कृष्ण' टेरत निबेरत सुभट-भीर,
हेरत ही हेरत सुबीर द्वार कढिगो॥

[४८]

आयौ व्यूह-द्वारनि सौं कढि, वढि मध्य माँहि,
रीति भेदिबे की भली भाँति अनुसारते।
'सरस' बखानै, ह्वै प्रफुल्लित सुभद्रानन्द,
मंद-मुख-हास कौ विलास-सुख सारते॥
बोल्यौ, हे सुमित्र-मित्र! कौसल विचित्र देखि,
दाबि दाँत-आँगुरी अमित्र हिय हारते।
आसिख जौ होती मिली मातु-पितु-मातुल सौं,
जानियै न जानैं तौ कहा धौं करि डारते॥

[४९]

एहो वीर-सारथी! प्रचार्यौ पारथी यौं सुनौ,
भारत कौ भार तौ हमारैं अब माथ है।
'सरस' बखानै, भीरु ह्वै न उर ऊनौ करौ,
दूनौ करौ साहस, कहा जौ बक्र पाथ है॥
भाथ है हमारौ भरौ भूरि भीति-भेदक सौं,
छेदक दुरूह-व्यूह हूँ कौं धनु साथ है।
हाथ है हमारैं तौ मनोरथ, चलैबौ अरु,
रथ कौ चलैबौ त्यौं तिहारैं अब हाथ है॥

[५०]

स्यंदन सुमित्र सूत हाँक्यौ के विचित्र ढग,
रिपु-दल देखि दग ह्वै अति चकायौ है।
'सरस' बखानै, कर्न-द्रौन लौं प्रबुद्ध-सुद्ध,
बीरनि हूँ माया-जुद्ध ताहि ठहरायौ है॥
सकल चमू मैं चलै चक्र लौं चहूँघा चारु,
कौंधि चंचला लौं नीठि दीठि चौंधियायौ है।
रंच न थिरात, ज्ञात मन कैं मनोरथ लौं,
एक ह्वै अनेक बीर व्यापक लखायौ है॥

[५१]

रथ-गति देखि चकी मति मतिमाननि की,
'धन्य! धन्य! सारथी'! इतोई कहि आवै है।
कोऊ पौन-गौन, चचला कैं सम कोऊ कहै,
कोऊ कहै तेज-तीर कैं समान धावै है॥
इमि उपमानैं, अनुमानैं अरु मानैं सबै,
'सरस' बखानैं हमैं औरै कछू भावै है।
निमि-वस वारे नर-नैननि की दीठि कहा,
ताकैं सम देव-दीठि हूँ न दौरि पावै है॥

[५२]

रथ अभिमन्यु कौ निहारि हिय-हारि रह्यौ,
रबि-रथ जाकौ जसालोक लोक छायौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं तुरंग-रंग देखि-देखि,
हय-पति दग-बदरग ह्वै लखायौ है॥
त्यौं ही पारथी कैं सारथी की आतुरी बिलोकि,
चातुरी बिहाय इन्द्र-मातलि लजायौ है।
अरुन कह्यौ त्यौं रह्यौ तरुन जबै मैं तब,
स्यंदन सुमित्र लौं विचित्र यौं चलायौ है॥

[५३]

स्यदन बिलोकि पाडु-नदन कैं नदन कौ,
बीर-कुरु नदन कैं ऐसे अकुलाने हैं।
'सरस' बखानै, ज्यौं वितुड झुड हारि हियैं,
सारदूल सावक निहारि बिकलाने हैं॥
सक्र-सम ताकौ तेज ताकि त्रस्त ह्वै कै अक्र,
भारी भट भीरु भये भीति मैं भुलाने हैं।
बाज लखि कौतुक विलात ज्यौं विपचिनि कैं,
रच मैं प्रपचिनि-प्रपच त्यौं विलाने हैं॥

[५४]

सुभट सुभद्रा-सुत बीरनि की भीरनि मैं,
चारौ ओर केसरी-किसोर लौं गराजै है।
'सरस' बखानै, देखि भीरि रिपु-बानन की,
आनन की ओप लै सचोप कोप छाजै है॥
रंग बदरंग त्यौं बिपच्छिनि कौं दंग देखि,
रंग निज लेखि मंद-हास मुख राजै है।
रौद्र-रस राँच्यौ त्यौं भयानक सौं माँज्यौ मनौं,
वीर-रस हास कैं बिलास मैं बिराजै है॥

[५५]

तमकि तपाक सौं सुभद्रा कौ लड़ैतौ लाल,
लाल करि नैन सिंह-सावक लौं गाजै है।
'सरस' बखानै, ज्या-निनाद सौं दिसानि पूरि,
कंचन-कोदंड पैं प्रचंड सर साजै है॥
बान झरि लाये मंडलाकृत सुचाप-बीच,
मंजु मुसुकात मुख-मंडल यौं राजै है।
सारत मयूख लौं मयूख रवि-मंडल पैं,
करत अमंगल ज्यौं मंगल बिराजै है॥

[५६]

परम तरंगी रन-रंगी पारथी है वीर,
तीखे-तीर आनि भट-भीरि छाँटि देत है।
करि प्रलयकर, भयकर सक्रुद्ध जुद्ध,
रुद्र लौं वरूथिनि-समुद्र पाटि देत है॥
'सरस' कहै, त्यौं बाल-प्रकृति-कुतूहल कै,
काहू कौं विचारि डरपोक डाँटि देत है।
नासा–कान काहू कैं हँसी ही मैं निपाटि देत,
कौतुक सौं काहू की कलाई काटि देत है॥

[५७]

बढ़ि वर वीर-भीर काटि-छाँटि तीखे तीर,
श्स्त्र–सस्त्र केतिक सधीर ह्वै पँवारे हैं।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु चातुरी सौं तिन्हैं,
आवत ही आतुरी सों निपट निवारे हैं॥
मन्द मुसुकात जात व्यूह मैं विलोकि ताहि,
अस्मकेस उर मैं उमाहि ज्यौं प्रचारे हैं।
आधौ कह्यौ पायौ कह्यौ चाह्यौ उत्तरापति सौं,
आहत ह्वै आधौ लियैं स्वर्ग कौं सिधारे हैं॥

[५८]

बिसिख-बिसाल-जाल-रुद्ध अपने कौं देखि,
क्रुद्ध ह्वै सुभद्रा-सुत तीखे तीर ताने हैं।
'सरस' बखानै, भट-भीरि करि छिन्न भिन्न,
खिन्न ह्वै कछूक त्यौं अचूक अस्त्र आने हैं॥
आगैं आय सल्य बिद्ध ह्वै कै सल्य-जालिनि मैं,
गिरत अचेत रथ-दंड पैं थिराने हैं।
लखि यह अक्र भये वीर वक्र भौंहैं तानें,
सौंहैं पग आनैं पै पिछौंहैं ह्वै पराने हैं॥

[५९]

पावस मैं मंडल दिखात चन्द्रमा पैं जैसौ,
तैसौ मंडलाकृत सरासन लखावै है।
हाथ पारथी कौ भाथ–भीतर सिधावै कवै,
सायक निकास औ विकास कवै पावै है॥
'सरस' बखानै, अनुमानै पै न जानै और,
मानै मुख-मडल सौं तेज तीर धावै है।
लेखन मैं आवै ना परेखन मैं आवै पुनि,
देखन मैं आवै ना निरेखन मैं आवै है॥

[६०]

खर सर मारि पच-वीस लै दुसासनि कौं,
वात ही मैं गात छलनो लौं छेदि दीनौ है।
'सरस' वखानै, पर्‌यौ रथ पै अचेत ऐसौ,
फूलौ तरु-किंसुक कट्‌यौ ज्यौं पर्‌यौ पीनौ है॥
निरखि दुसासन-दसा यौं भज्यौ सारथी ज्यौं,
पारथी त्यौं मद-मुसकाय हास कीनौ है।
जा! रे नीच पापी! सुप्रतापी कौ सँघारिवौ औ,
नारि कौ उघारिवौ समान करि लीनौ है??

[६१]

पौन-गतिमान तेजवान प्रलयानल लौं,
ऐसौ महा बान एक उत्तरेस आन्यौ है।
'सरस' वखानै, पांडवीय गाडवीय जैसौ,
भारी धनु आनि ताहि कान लगि तान्यौ है॥
मार्‌यौ है दुसासन की छाती ताकि ज्यौं ही त्यौं ही,
वेधि हँसली कौं भूमि सायक समान्यौ है।
मानौ पखवान उडि ऊपर फनीस फेरि,
फुफकत फारि तरु-विल मैं विलान्यौ है॥

[६२]

देखत दुसासन-हुतासन सिराई सबै,
पारथी-प्रसंसा-पाठ ठाठ सौं पढ़ै लगे।
'सरस' बखानै, 'जै जुधिष्ठिर' कै पांडवहू,
करत सक्रुद्ध जुद्ध-तांडव बढ़ै लगे॥
इन्द्र-पवनादि, चित्र-चित्रित सुकेतु-जुक्त,
धृष्टिकेतु आदि वीर चायनि चढ़ै लगे।
पर्न सम त्यौं ही तिन्हैं पाछैं पारि कर्न बेगि,
आछैं पारथी कौं सायकानि सौं मढ़ै लगे॥

[६३]

कोपि अभिमन्यु रन-रोपि ज्यौं टँकोर्यौ धनु,
काँपि उर चाँपि रहे सूर-सरकस लौं।
'सरस' बखानै, यौं सँधानै वीर तीर-भीर,
रुँधि रन-धीर भये कीर परवस लौं॥
तोलन न पावैं धनु, खोलन न पावैं मुख,
सनमुख बोलन न पावैं करकस लौं।
देखत ही देखत बनावै वीर बाननि सौं,
आननि रिपूनि कैं खुले पै तरकस लौं॥

[६४]

कौसल-धनी लौं अभिमन्यु-रनी-कौसल यौं,
देखि गुरु द्रौन सौं सराहि चाहतै वन्यौ ।
'सरस' बखानै, उमगान्यौ इमि छोह-मोह,
द्रोह-कोह टारि प्रेम-बारि बहतै वन्यौ ॥
दूरि दुरै द्वैष-दुराभाव, त्रपा कौ प्रभाव,
साँचौ कृपा-भाव कौ स्वभाव गहतै वन्यौ ।
पारथ पिता ह्वै धन्य ! ऐसैं सुत-सारथ कौ,
पारथ-गुरू ह्वै धन्य ! हौं हूँ कहतै बन्यौ ॥

[६५]

सुनि लखि ऐसी दुरजोधन अनैसी मानि,
आनि सब जोधन पैं वचन उचारौ है ।
'सरस' बखानैं, सुनी, द्रौन जौ प्रमानैं इतै,
'धन्य अभिमन्यु ! धन्य पारथ ! हमारौ है' ॥
धन्य हम ! जाकैं सिष्य-वर कौ सपूत ऐसौ,
जैसौ ना रह्यौ है, वीर है, न होनवारौ है ।
पारथ लौं सिष्य, सिष्य-पूत अभिमन्यु जैसौ,
द्रौन जैसौ कौन है गुरू न जाहि प्यारौ है ॥

[६६]

जीतै सत्रु-पच्छ सिष्य वारौ, कै हमारौ पच्छ,
जीति रन-दच्छ-द्रौन ही कैं दुहूँ कर मैं।
गुरु की कहा है कुरुराज कहै जोधनि सौं,
सिष्य-सुत जीतैं जस दूनौ जग भर मैं॥
'सरस' बखानैं, गुनी-गनक प्रमानैं यहै,
मानैं हम सोई लेखि लीला यौं समर मैं।
जापैं दीठि देत नीठि ताकी तौ करै समृद्धि,
बृद्धि ना करै है गुरु बैठै जाहि घर मैं॥

[६७]

ऐसौ चाव भाव कैं प्रभाव सौं प्रभावित ह्वै,
व्यर्थ है विचारिबौ कि याकौं द्रौन मरिहैं।
लखि अपनो हूँ सुदूरुह-व्यूह खडित यौं,
कहि रन-पडित प्रसंसा तासु करिहैं॥
'सरस' बखानैं, हम बिलग न मानैं तऊ,
आनैं भीति, ऐसी नीति सौं न पार परिहैं।
हारि रहे हिम्मति निहारि वाल-किम्मति जौं,
तुम सबहूँ, तौ बिना मारैं हम मरिहैं॥

[६८]

लखि अभिमन्यु-अस्त्र-सस्त्र सौं समस्त सैन,
त्रस्त-छिन्न-भिन्न-खिन्न ह्वै कैं विकलानी है।
'सरस' बखानै, द्रौन-कर्न आदि जोधन सौं,
नृप दुरजोधन सभीत यौं प्रमानी है॥
एक लघु वालक बिनासे देत सैन सबै,
ठाढे चित्र-काढे तुम कैसी भीति आनी है।
मति बिकलानी, थकि-थहरि थिरानी गति,
किम्मति किरानो किधौं हिम्मति हिरानो है॥

[६९]

चारि दिन ही कौ एक बालक अयान आय,
मारि यौं मचाई हारि सैन अकुलानी है।
'सरस' बखानै, लियौ आपुनेई हाथ खेत,
भागे भटमानो भूरि भीरुता समानी है॥
तुम सबहूँ ह्वै गूढ जुद्ध के बिजेता वीर,
ताकत बिमूढ लौं यौं ताकत थिरानी है।
चातुरी चुकानी चकि, आतुरी लुकानी किधौं,
जगत-प्रमानी सब सूरता सिरानी है॥

[७०]

निज-निज निंदित बिकारन-निकारन कौं,
प्रथम अकारन महारन यौं रोप्यौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं प्रपंच रचि पचनि कैं,
आगे रे अभागे! दोख मम मुख छोप्यौ है॥
बढ़ि-बढ़ि बातैं करि गढ़ि-गढ़ि घातैं पुनि,
स्वारथ हमारौ, परमारथ हूँ लोप्यौ है।
छीजत अनीक लखि बिलखि सुजोधन यौं,
कहि कटु बैन छुद्र-नीति-पटु कोप्यौ है॥

[७१]

खावैं मार चार वार, पावैं पुनि मारि जऊ-
एक वार हूँ, न तऊ पाछैं पग पारैं हम।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै कुरुराज-सैन,
मन्यु-भरौ काल अभिमन्यु कौं विचारैं हम॥
काहू की न बूझै कोऊ, सूझै है न आपुनपौ,
जूझै अनी आपुनी घनी सहाय सारैं हम।
चलत न एकौ, हाय! थकित उपाय भये,
कैसौ कुरुराय! करैं जानि कै न हारैं हम॥

[७२]

सम्मुख भई है दुखदायी जोगिनी धौं आजु,
होतौ न तौ ऐसौ, एक बालक सौं हारे हम।
'सरस' सुनावै, यौं बतावै वीर लै उसाँस,
बडे-बडे आँस यौं लहू कै हाय! ढारे हम॥
सक्र के विजेता द्रौन, कर्न, आपु, अक्र भये,
बक्र विधि ह्वै गये हमारै धौं विचारै हम।
बादि ही हमैं तौ कुरुराज! यौं धिकारै आपु,
आपै आपु आपुने कौं आपु ही धिकारै हम॥

[७३]

अछत तिहारै छत-विच्छत ह्वै हारै हाय!
साँसन की आस न दुसासन की ह्वै रही।
'सरस' बखानै, गहि हाथ कुरुनाथ कह्यौ,
देखौ कर्न! सैन ह्वै अनाथ, भीति भ्वै रही॥
पारथ कुमार मार जैसौ सुकुमार ही की,
बानन की मारि देखि याननि मैं ग्वै रही।
व्यूह-गत नृपति समूह-पति आपति मैं,
करन तिहारै इन करन कौं ज्वै रही॥

[७४]

देखि थिति व्यथिति अनी की यौं अनोकी कर्न,
बेगि रन-कौसल-धनी की ओर धायौ है।
'सरस' बखानै, लै सँधाने घने अस्त्र-सस्त्र,
त्रस्त उत्तरेस ह्वै न तौ हू अकुलायौ है॥
पैने पर्व-जुक्त भल्ल-बान कै बिमुक्त वीर,
काटि धनु-छत्र-ध्वजा भूमि पै गिरायौ है।
सारथी-समेत कै अचेत कर्न हू कौं बेगि,
पारथी महारथी समोद मुसुकायौ है॥

[७५]

व्याकुल बिलोकि कर्न कौं यौं कर्न-बन्धु वेगि,
क्रोध सौं समाकुल ह्वै ज्वाला-सम तमक्यौ।
'सरस' बखानै, त्यौं टँकोरत प्रत्यंचा-घोर,
लपट-समान उत्तरेस-ओर लमक्यौ॥
घालि दस बान, ध्वजा-छत्र करि छिन्न-भिन्न,
खिन्न-पारथी औ सारथी कौं देखि दमक्यौ।
कुसुम-समान काटि एक बान ही सौं सीस,
आहुति लौं लैकै अभिमन्यु हँसि ठमक्यौ॥

[७६]

लखि यह।बिलखि बढ्यौ है भटमानी कर्न ,
वह्नि-वर्न ह्वै कैं पारथी सौं आय जूट्यौ है ।
'सरस' बखानै , उत्तरेस बढि बाननि सौं ,
प्राननि निवारि मारि ताकौ सब लूट्यौ है ॥
पुनि बढ़ि बीर, बाहिनी कौं सुनाराचनि की ,
आँचनि की दाह सौं दह्यौ , न कोऊ छूट्यौ है ।
छूट्यौ है सबै कौ धीर, बीर तीन-पाँच ह्वै कैं,
नौ-द्वै अर्ध बायस भे , चक्रव्यूह टूट्यौ है ॥

[७७]

माची मार ऐसी उत्तरेस बर-बाननि की ,
प्राननि की आँधी उठी भैरवोय-पुर मैं ।
'सरस' बखानै , महि-मण्डल पैं छाये रुण्ड ,
मुड मँडराये त्यौं ख-मंडल-सुपुर मैं ॥
बैठि गई जच्छ-मडली सकाय दृस्य देखि ,
पैठि गई चिता लेखि औरै सुरासुर मैं ।
ऋषि-मुनि-धारना कवध-ओर धाय चली ,
राहु-सुधि आय चली भानु हूँ कैं उर मैं ॥

[७८]

ह्वै है हाय ! कैसौ अब ऐसौ भयौ भारी जुद्ध ,
रुद्ध पथ देखि देवतादि घबरावैं हैं ।।
'सरस' बखानै, देखि मार अस्त्र-त्राननि की ,
त्रस्त किन्नरादिक अधीर ह्वै परावैं हैं ।।
ह्वै कै बान-बिद्ध गिद्ध जैसे मँडरावैं गज ,
भागे सिद्ध-दिग्गज सभीत थहरावैं हैं ।
देखि रुंड-मुंड राहु-केतु सौं सकाने ग्रह ,
बिग्रह बिलोकि न उपग्रह थिरावैं हैं ।।

[७९]

प्रलय-प्रचंडानल-तुल्य सारथी सौं त्रस्त ,
ह्वै कैं अस्त-व्यस्त भट भाजत ज्यौं हेर्‌यौ है ।
'सरस' बखानै, बृषसेन से रथीनि आय ,
प्रमुख महारथीनि धाय ताहि घेर्‌यौ है ।।
सारथी-विहीन बृषसेन सौं वित्रस्त अस्व ,
भाजे पारथी कैं, सारथी पै तिन्हैं फेर्‌यौ है ।
मारि सप्त-सायक बसाती,धमक्यौ ज्यौं त्यौं ही ,
उत्तरेस-बान सीस ताकौं काटि गेर्‌यौ है ।।

[८०]

बाजि जिमि झपटि झकोरै लै लवा कौं तिमि,
उत्तरेस सत्यश्रवा कौं गहि झकोर्‌यौ है।
'सरस' बखानै, बढ़ै जौ ही बर-बड ताहि,
श्रौनित-नदी मैं खंड खंड करि बोर्‌यौ है॥
दाप करि चाप कैं टँकोरत पराने रथी,
अस्त-व्यस्त ह्वै महारथीनि मुख मोर्‌यौ है।
ओर्‌यौ है न कोऊ पुरहूत-पूत-पूत-घात,
भागे भट जात, कोऊ समर न जोर्‌यौ है॥

[८१]

मद्र-नृप-सुवन सुनाय भद्र बैन आय,
धीरज बँधाय धाय पारथी सौं भिरिगौ।
'सरस' बखानै, उत्तरेस हँसि बोल्यौ अरे!
का तिरै रनोदधि, न बाप सौं जौ तिरिगौ॥
घाले सल्य-सुत कैं बिपैलै पट-आननि सौं,
आहत ह्वै बीर बस ताही सौं अभिरिगौ।
रुक्म-रथ-ऊपर निमूल-कदली लौं झूलि,
रुक्म-रथ छिन्न ह्वै निमेख ही मैं गिरिगौ॥

[८२]

पच्छ-हत पच्छिनि लौं विकल-बिपच्छिनि मैं,
धाक बँधी पारथ-सपूत कैं सपूती की।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानैं देव, मानौ छई,
भूधरनि हाँक पुरहूत-पुरहूती की॥
कौरव-कपूती के कपोती की सुनात नहीं,
ऐसी तनी तान ताकैं तूती-करतूती को।
वाननि की वायु सौं बिलानी त्यौं उडानी कहूँ,
रिपु मैं रहो न रच रज-रजपूती की॥

[८३]

धाक अभिमन्यु की धँसी यौं, बसी ऐसी हाँक,
आँक न दिखात, परे क्यौंत विथराने से।
'सरस' बखानैं कुरुराज कैं कढ़ैं न बैन,
नैनहूँ चढ़ैं न बढ़ैं बाहु विथकाने से॥
हिम्मति-हुलास हियैं हुमसि हिराने सबै,
उकसि उराने रोख-दोखहूँ सिराने से।
ऐसी भीति-भावना समाई रग-रग माँहि,
डगमग जाँहि पग, मग मैं थिराने से॥

[८४]

मानि कुरुराज धाक-ध्वस्त निज बीरनि कौं
जानि भट-भीरनि कौं अस्त व्यस्त कोप्यौ है।
'सरस' बखानै, बान रोप्यौ लै सरासन पैं,
धाय अभिमन्यु सौं समन्यु रन रोप्यौ है॥
देखि यह द्रौन, कृपा, कर्न आदि वीरनि लै,
तीरनि की भीरनि मैं पारथीहिं लोप्यौ है।
लखि मुख-कौर लौं छुट्यौ है कौरवेस ताहि,
लेत रिपु-स्वान, तिन्हैं मारि बान तोप्यौ है॥

[८५]

जात दुरि जोधन मैं काह दुरजोधन तू,
तोसौं वैर-सोधन कैं हेतु लरिवौ चहौं।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै उत्तरेस वीर,
देबि-द्रौपदी कौ दाह-दुख-दरिवौ चहौं॥
देखत अनी के नीके चण्डिका कैं खप्पर मैं,
स्रोनित तिहारौ आनि भूरि भरवौ चहौं।
पूज्यबर भीम की तिहारी जाँघ तोरिबे की,
तोरि कै प्रतिज्ञा न अवज्ञा करिवौ चहौं॥

[८६]

पढ़ि-पढ़ि मत्र घने घोर घेरि घाले जत्र,
तंत्र हू सौं त्रस्त ह्वै न टरैं बाल टसक्यो।
'सरस' बखानै, लखि बिलखि अचंभित भे,
थभित भे अंग औ करेजौ मुरि मसक्यौ॥
मातु-दया-दीठि सौं भयौ जौ वज्र-पीठ गात,
घात-प्रतिघातनि सौं पोर-पोर कसक्यौ।
तब कुरुराय यौं निहारि हारि असहाय,
हाय! हाय! करत बिहाय खेत खसक्यो॥

[८७]

जीवन नवीन पाय धीर धराधारिनि सौं,
बढ़ि प्रतिकूलनि पैं चढ़ि हहरानी है।
'सरस' बखानै, को प्रमानै वक्र-चक्र-चाल,
काल की सहोदरी-महोदरी रिसानी है॥
पानी सौं चढी है, बडी बाढ़ सौं बढ़ी है वह,
मन्यु सौं मढ़ी है, अभिमन्यु पैं उफानी है।
प्रतिहत ह्वै कैं त्यौं महान-दृढ तीरनि सौं,
वाहिनी विलोडित ह्वै पलटि परानी है॥

[८८]

श्रौन-गति जुद्ध-महानाद सौं भई है वन्द,
मन्द परि बानी को सवै गति सिरानी है।
'सरस' बखानै, थिर-थकित भये हैं अङ्ग,
दङ्ग-दृग-चञ्चल अचञ्चलता आनी है॥
चालत हूँ बीरनि कैं चलत न क्यौं हूँ कर,
कौरव-अनीक अस्त-व्यस्त ह्वै परानी है।
सकति सवैई तन-मन को गई है मिटि,
जौ बची सौ पाँयनि मैं समिटि-समानी है॥

[८९]

करि-करि केहरि-निनाद पारथी लै सख,
रिपु-भयकारी जयकारी नाद कीनौ है।
'सरस' बखानै, उठ्यौ कूजि चहुँ कोदनि सौं,
मोदनि सौं पांडव-अनी कौं मढि दीनौ है॥
कौरव-चमू मैं भयौ है अपार हाहाकार,
जैजैकार पाडव-चमू मैं भयौ पीनौ है।
वाजे जय-बाजे त्यौं असख सख एकै सग,
दग दवे दिग्गज, फनीस भय-भीनौ है॥

[९०]

थकित-थिराये रन-धीरनि कौं लाजत औ,
भाजत सभीत सैनहूँ कौं ज्यौं निहार्‍यौ है।
'सरस' कहै, त्यौं धाय लखन-कुमार आय,
चाप हूँ चढ़ाय पारथी कौं ललकार्‍यौ है॥
आव नट-राजानुजा-नंदन ! रे स्यंदन लै !
सदनि मैं कोबौ कहा मर्दता बिचार्‍यौ है।
सुनि कटु बैन उत्तरेस करि बक्र नैन,
धरि धनु-बान पैन बचन उचार्‍यौ है॥

[९१]

अब इहिं लोक माँहि लखन चहै जौ और,
लखन ! लखै न फेरि लखन न पैहै तू।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै उत्तरेस बीर,
एक तीर ही मैं अबै जम-पुर जैहै तू॥
यातैं जौ चहै है कहिबौ औ सुनिबौ कछूक,
चूक जनि औसर नहीं तौ पछितैहै तू।
दैहै दोख बादि, कै बिवाद दूर, मान सीख,
भीख लै अभै की जा, न माँगे फेरि लैहै तू॥

[९२]

कहि इमि उत्तरेस आनि हियैं रोषावेस,
देखि दुरभाव-द्वेष औरै निरधार्‌यौ है।
'सरस' बखानै, वेगि भीषन सरासन पैं,
तीखन लै भल्ल-बान प्रखर सँभार्‌यौ है॥
लखन निरारौ, बान आवत हमारौ यह,
देखैं तौ तिहारौ बल, ज्यौं कहि पँवार्‌यौ है।
प्रान-पौन-भच्छक त्यों तच्छक लौं धाय, काटि,
कुरुपति-नन्दन कौं स्यंदन पैं पार्‌यौ है॥

[९३]

लखि निज लाल कौं विहाल पर्‌यौ, काँप्यौ कछू,
झाँप्यौ नैन हाल हों करेजौ कर गहिकै।
'सरस' बखानै, चेत आयौ, फिर ह्वै अचेत,
साँसनि उमाहे औ कराहे ठाँय ठहिकै॥
जौं लौं धरि धीर, ह्वै अधीर भजे जोधन कौं,
उठि दुरजोधन प्रचार्‌यौ कटु कहिकै।
तौ लौं धीर ढाहिनी प्रचंड रक्त-वाहिनी मैं,
वाहिनी के खपिगे कितेक वीर बहिकै॥

[९४]

लूट्यौ लाल मेरौ याहि मारौ मरौ,धावौ वीर,

पीर उर दावि कुरुनाथ ज्यौं प्रचार्यौ है।

'सरस बखानै, त्यौं बृहद्वल, कृपा औ कर्न,

द्रौन, कृतवर्म, धाय द्रौनी ललकार्यौ है॥

आवौ, वीर! आवौ इत, अवलौं रहे हौ कित,

ऐसौ कहि उत्तरेस धनुप सँभार्यौ है॥

कीन्हीं मार भीपन पराने ह्वै पिछौं हैं सवै,

सौं हैं आय एकहूँ न आगैं पग पार्यौ है॥

[९५]

एते माँहि केते भट भारी भूरि भीषन लै,

चामीकर-पुख तीर-तीखन चलाये हैं।

'सरस' बखानै, बढ़ि वीर दुरजोधन त्यौं,

जोधन कैं अगनि उमगनि उनाये हैं॥

त्यौं ही अभिमन्यु आतुरी सौं, चातुरी सौं तिन्हैं,

काटि-ऑटि, चन्द लौं घटा सौं कढ़ि आये हैं।

अकुस-प्रहार सौं सक्रुद्ध ह्वै मतंगज ज्यौं,

पांडु-पूत-अगज उपावि त्यौं उठाये हैं॥

[९६]

षट-भट-रुद्ध जुद्ध मॉहि अपने कौं देखि,

क्रुद्ध है सुभद्रा-सुत अस्त्र लै सँवारे हैं।

'सरस' बखानै, त्यौं बिसाल बिसिषासन कौं,

तानि वेप्रमान वान विषम वगारे हैं॥

प्रलय-समै मैं ताप-तायें मारतड मनौ,

प्रखर प्रचड कर-निकर निखारे हैं।

सृष्टि-प्रलय कर त्रिलाचन बिलोचन सौं,

दृष्टि कैं भयकर-मयूख धौं विखारे हैं॥

[९७]

चारौ ओर घोर-वनो कौरव-अनी सौं त्रस्त,

ह्वैकैं देव-गायकास्त्र लीन्ह्यौं मोहकारी है।

'सरस' बखानै, वाहिनी कौं यौं बिमोहित कै,

वीर बिजय-ध्वनि-रन-ध्वनि प्रचारी है॥

ताकत गॅवाये सबै ताकत अवाय रहे,

वाय मुख, का, कत, की भावना विसारी है।

क्रोधनि-समायौ कहि धायौ दुरजोधनि यौं,

वलि वलिहारी भली यह अभिहारी है॥

[९८]

सुनि अभिमन्यु की तमातम तमाम देह,
पाय ज्यौं घृताहुति प्रचडानल तमकी।
'सरस' बखानै, लाल-लोचनि मैं लाली लसी,
नीठि दीठि दामिनी सी दम-दम दमकी॥
मरकत ह्वै ज्यौं प्रतिभाति पुखराज-प्रभा,
त्यौं ही ओप आनन-गुराई गारि गमकी।
मंजुल-मयक-मुख-मंडल मैं मडित ह्वै,
मंगल की मानौ उई ऊपा चारु चमकी॥

[९९]

'जै जै धर्मराज' टेरि, 'पारथ! महद्रथ जै,'
'जै जै कृष्ण' टेरि ज्यौं जयद्रथ पै धायो है।
'सरस' पढ़ै, यौं बढै जौलौं बीर तौलौं आय,
क्राथसुत पथ पै बितुड-झुड लायौ है॥
देखत ही देखत बिदारि सिह-सावक लौं,
बाननि कौ जाल बिकराल बिखरायौ है।
छाँटि जुग बाहु, काटि सीस क्राथ-नदन कौ,
स्यदन पै पारथी पताका फहरायौ है॥

[१००]

ताकौं देखि पाडव-चमू मैं मचौ जैजैकार,
हाहाकार कौरव-चमू कैं कै सिधाये हैं।
'सरस' वखानै, टेरि भाजत बृहद्बल कों,
नृपति वृहद्बल सकोप वेगि धाये हैं॥
आवत हीं आवत सुभद्रा-सुत मारि मारि,
वाननि विदारि तिन्हैं भू पर गिराये हैं।
त्यौं ही धाय, आय कर्न घोर-घने अस्त्र-सस्त्र,
वीरवर पारथ-कुमार पैं चलाये हैं॥

[१०१]

वेगि सब कर्न कैं पॅवारे अस्त्र सस्त्र काटि,
छाँटि कै तिहत्तर लै तीखे तीर मारे हैं।
'सरस' वखानै, कर्न कौं विदारि उत्तरेस,
कोपावेस लाय धाय द्रौन पैं प्रचारे हैं॥
वीर बर वारन कौं पायौ ना निवारन कै,
सैनिक-सवारन कैं वृन्द गये मारे हैं।
चारौं ओर केवल सुनात घोर हाहाकार!
दीखत अपार रक्त-धार के पनारे हैं॥

[१०२]

जात गुरु द्रौन पैं बृहन्नल- कुपूत कहा,
देखैं करतूत जौ दिखाइवे कौ दावा है।
'सरस' बखानै, व्यर्थ नाचत है नाच कहा,
जाँच महा सूरनि कौं, काटै कहाँ कावा है॥
काहे जात श्रान्त ह्वै अबै हीं सान्त-सागर पैं,
देख तौ इतै हूँ रच कैसी दाह-दावा है।
कहि कुरुनाथ यौं उठाय अस्त्र-सस्त्र हाथ,
रोंकि पारथी कौ पाथ तापैं कियौ धावा है॥

[१०३]

जेते अस्त्र-सस्त्र घोर घाले कुरुनाथ तिन्हैं,
पारथी निपाते ज्यौं सनाल कंज सर कैं।
'सरस' बखानै, अङ्ग दङ्ग दुरजोधन कैं,
थकित थिराने, रहे एक न असर कैं॥
परत परान लै परान-हेत पाछैं पाँव,
आछैं दाँव पेंच चातुरी कैं साथ सर कैं।
हँसि अभिमन्यु कह्यौ हेर-फेर चौसर कैं,
देखौ तात ! देत काम सामने न सर कैं॥

यौँ लखि सकाय सैन बिलखि पराई उत ,

इत मुरि पारथी जयद्रथ पैँ धायौ है ।

'सरस' बखानै , तेज-वायु-व्योम-तत्वनि कैँ,

सत्वनि-रचाये बान-बृन्द बिखरायौ है ॥

साहस बिहाय भजे साहसी हूँ हा ! हा ! करि,

जोई रह्यौ सोई सुर-पुर कौँ सिधायौ है ।

लखि यह दारुन-दसा कौँ रोष-रक्त-वर्न ,

कर्न लौँ चढाये धनु कर्न बीर आयौ है ॥

[१०५]

तजि उपकरन बृथाके जौ कर न थाके ,

बाँके रन कौसल कै करन ! दिखावौ तौ !

'सरस' उचारै, अभिमन्यु यौँ प्रचारै हँसि ,

चारौ फल आनि कुती-बान कैँ चखावौ तौ ॥

प्रखर-प्रताप-दाप अग्नि-ज्वाल जैसै ऐसे ,

जामदग्नि सौँ जो सिख्यौ सो हमैँ सिखावौ तौ।

डोलत सिपाही आनि स्याही मुख-ऊपर लै ,

भू-पर विजै कौ लेख हम सौँ लिखावौ तौ ॥

[११०]

आवौ बान-पथ पैं न रथ पैं, लुकाने जाव,
एक तुम कारन हौ यहि रन-रारि कैं ।
जेहि बल भूलि, प्रतिकूल ह्वै रहे हो फूलि,
तूल लौं उडैहौं ताहि देखत तमारि कैं ॥
'सरस' बखानैं, हम बचन प्रमानैं आजु,
बचन बचाये हूँ न पैहौ त्रिपुरारि कैं ।
मरन निवारौ चहौ करन ! हमारी तव,
सरन लहौ औ गहौ चरन मुरारि कैं ॥

[१११]

सुनि फबती सी उत्तरेस की प्रतापी कर्न,
रोष रक्त-वर्न कै सँभारी सक्ति कर मैं ।
'सरस' बखानै, कछू आन्यौ मुख सौं न बात,
घात करिबौई ठीक ठान्यौ है समर मैं ॥
'जयति मुरारे' त्यौं पुकारे अभिमन्यु वीर,
तीर लै करारे चारि मारे हरबर मैं ।
मोह आदि व्याधि कैं निपाटि देत जैसैं भक्ति,
तैसैं सक्ति दीन्हीं काटि आवति अधर मैं ॥

[११२]

बिफल बिलोकि सक्ति कोप्यौ कर्न रोप्यौ रन ,
खैँचि धनु कर्न लौं असीत-सर मारे हैँ ।
'सरस' बखानै , अभिमन्यु-कौच ऊपर वै ,
ऐसे गिरे जैसें बुन्द बारिद तैं डारे हैं ।।
बोले द्रौन देखि धन्य प्यारे अभिमन्यु ! फेरि ,
कर्न कों अधीर लेखि बचन उचारे हैं ।
जौलौं सिष्य-पारथ सपूत धनु-धारी इमि ,
धारे कौच तौलौं बान बिफल तिहारे हैं ।।

[११३]

अनुमति मानि आनि सोई मति कर्न बीर ,
ताखे तीर तीसक सरासन पै साजे हैं ।
'सरस' बखानै , अनजानै पारथी कौ धनु ,
काटि हूँ महारथी कहावत न लाजे हैं ।।
छिन्न बिसिखासन कैं लीन्हें जुग भाग भिन्न ,
पारथ-कुमार यौं घरीक लौं बिराजे हैं ।
मंडित-प्रताप सम्भु-चाप करि खंडित ज्यौं ,
खंड-जुग लीन्हैं रामचन्द छबि छाजे हैं ।।

[११४]

चकि-जकि रच ही प्रपच पेखिवै कौं पुनि,
भौं हनि मरारि मुख मोरि ज्यौं निहारयौ है।
'सरस' बखानै. धनु-छेदक तमारिज कौं,
देखि उत्तरेस वीर वचन उचारयौं है।।
छाजत न ऐसौं तुम्हैं कर्न! सूरबीर-बृती,
कीन्हीं कुकृती क्यौं अरे! ज्यौं कहि विकारयौ है।
त्यौं ही कृतवर्म नीच पाय वीच मारे हय,
ताकै सारथी कौं कृपाचारज सँघारयौ है।।

[११७]

धनु-रथ-सारथी-विहीन पारथी ह्वै इमि.
रूखे से, सके से, रहे सूखे से, सकाने से।
'सरस' बखानै, ह्वै सधीर भरि नीर नैन,
बोले वर बैन सूत सौं सनेह-साने से।।
उरिन हमारै रिन सौं सुमित्र! ह्वै कैं लहौ,
सुगति पवित्र, रहौ सुकृति-समाने से।
अब कहिवै कौं और औसर नहीं है बस,
जै! जै! कृष्ण!!! कहत सिधावौ घमसाने से।।

[११६]

एती बेर ही मैं धँसे ही मैं वान केते पैन,
चित्त पारथी कौं ह्वै अचैन अकुलायौ है।
'सरस' बखानै, अस्त्र-हीन त्रस्त वालक पैं,
सस्त्र घने घालक रिपूनि वरसायौ है॥
धर्म रजपूती कौ, सपूती कौ विचारि मर्म,
कर्म लखि कौरव-कपूतो कौ रिसायौ है।
ठायौ है हियै मैं वस लोबौ अरु दीबौ प्रान,
पानि मैं मियान सौं कृपानि काढ़ि धायौ है॥

[११७]

आई वीर-पानि मैं मियान सौं कृपानि कढी,
पानो-चढी बाढ़ सौं प्रगाढ गढी ढावै है।
'सरस' बखानै, त्यों विपच्छिनि कौं पच्छिनि लौं,
लपकि लपालप खपाखप खपावै है॥
सक्र-असनी लौं चक्रव्यूह की अनी लौं घूमि,
चूमि-चूमि भूमि पुनि व्यौम कौं सिधावै है।
रिपु-बल-सालो सैन सघन-घनालो माँहि,
खेल चचला लौं चारु चमक दिखावै है॥

[११८]

वीर अभिमन्यु कैं सुपानी की कृपानी माँहि,
पानी को धरी जो धार धीरज उचाटै है।
'सरस' बखानै, गति विषम बहै सवेग,
थावर औ जंगम दुहून कौं उपाटै है॥
छाँटि-छाँटि भूमिधर-धर धरनी पै ढाइ,
विग्रहीन-वध प्रतिवधनि निपाटै है।
उमँगि उमगनि लौं तरल तरगनि लै,
चलि प्रतिकूल पै करारी काट काटै है॥

[११९]

जीवन की समर-पिपासा होति जासौं सान्त,
आसा-पास-भ्रान्त प्रान मुक्ति-मोदता लहैं।
'सरस' बखानै, धार विमल विलोकि जासु,
मोन मन कौतुक कलोल करिबौ चहैं॥
जामैं ह्वै विलीन-लीन पानीदार हूँ प्रगाढ़,
छिप्रबाहिनी कैं सरदार बाढ़ मैं बहैं।
पानी पारथी की है कृपानी मैं विचित्र धरो,
मित्र औ अमित्र जासौं जीवन नयौ लहैं॥

[१२०]

कढ़त मियान-गर्त सौं सुदामिनो लौं कौंधि,

चख चकचौंधि चलै यौं प्रभानि पागी है।

'सरस' पढ़ै त्यौं बढ़ै लपकि प्रभजन मैं,

पाय रिपु-प्रान-पौन और जोर जागो है॥

जीवन उडाय ताप-जोवन-बिलासिनि कौं,

दलदल हूँ कौं छारिवै मैं अनुरागी है।

पानीदार पारथ-सपूत की कृपानी गत,

पानीदार धार मैं विलीन बडभागी है॥

[१२१]

कर करवाल काल-जीभि सी कलेवा करै,

कटि कै रिपूनि, जौ जनवा ताकि तमकी।

'सरस' कहै त्यौं लखि लोथनि की भीति,उठी,

सैन-भीति देखि द्रौन द्रोह दाव दमकी॥

राखैं एक, छीजत अनेक, सोचि घाल्यौ वान,

चद की कला लौं खड्ग खडित ह्वै चमकी।

सुबरन-मूठि, मैं रही जौ पारथी कैं कर,

सोऊ व्यर्थ मूँठि लौं मही मैं परि ठमकी॥

[१२२]

धायौ दंड लै उदंड वैरिनि कौं दंड देत,
मानौं काल-दंड लै प्रचंड जम धायौ है।
'सरस' बखानै, वड वीर रन-धीरनि कौ,
रन कौ उछाह-चाह-साहस सिरायौ है॥
घात-प्रतिघात कै रथीनि त्यौं महारथीनि,
सारथीनि साथ नर्क-नाथ पैं पठायौ है।
ह हा तात मात मचो त्राहि त्राहि की पुकार,
हाहाकार ! कौ अपार नाद नभ छायौ है॥

[१२३]

टूटे अस्त्र-सस्त्र देखि छूटे अवसान जवै,
त्रस्त ह्वै कछूक अभिमन्यु अकुलायौ है।
'सरस' वखानै, त्यौं प्रपचिनि-प्रपच लेखि,
पेखि भरि वानन को आनन उठायो है॥
कहि कटु वैन नैकु नैन-मुख वक्र करि,
अक्र करि सैन रथ-चक्र गहि धायौ है।
सक्र-मदहारी चक्रधारी ह्वै सक्रुद्ध मानौ,
भीष्म-जुद्ध दृस्य आय फेरि दुहरायौ है॥

[१२४]

कीन्ही मार भारी चक्र लैकै चक्रधारी-सम',
सारी सैन भाजी, बीर-मडल सकायौ है।
'सरस' कहै त्यौं, कह्यो द्रौन ! नीति-पडित ह्वै,
खडित कै खङ्ग क्यौं अधर्म उर ठायौ है॥
एते माँहि हा ! हा ! करि धाये धरि धीर वीर,
मारि-मारि तीर काटि चक्र हूँ गिरायौ है।
छिन्न निज-चक्र, छल-चक्र, विधि-ब्रक्र लेखि,
पेखि घनी आपदा गदा लै बाल धायौ है॥

[१२५]

'जै जै कृष्ण' ! टेरि वीर भीम, मारुती लौं चल्यौ,
दल-बल सत्रु कौं दल्यौ है, बिचलायौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं दुसासनी सनी लौं आय,
लाय असनी लौं गदा-जुद्ध ठहरायौ है॥
दोऊ बीर बालि औ सुग्रीव लौं प्रहार करैं,
घात-परिहार करैं, कोऊ ना थिरायौ है।
घात प्रतिघात सौं दोऊ कैं सिथिलाये गात,
दोऊ परे ब्याकुल, न कोऊ उठि पायौ है॥

[१२८]

लीन्ह्यौ खेत भारी कुरुनाथ सौं अकेलैं जाय,

मन कौ कियौ है धाय-धाय हल-नल तैं।

'सरस' बखानै, अरि-हर सर सौं बखेरि,

हेरि अन्तराय कौं निकाय हर्‌यौ तल तैं॥

सींचि निज सर तैं निकासे पुनि जीवन सौं,

टारी अरि-ईति-भीति सारी बाहु बल तैं।

काटि-काटि फूले फरे बिरवा सुकीरति कैं,

रासि कै सुभद्रानन्द सोयौ परि कल तैं॥

[१२९]

पारथ-सुभद्रा धन्य! धन्य! अभिमन्यु वीर,

बिस्व बलिहारी है तिहारी या सपूती पैं।

'सरस' बखानैं, यौं प्रमानैं नर किन्नर हूँ,

मानैं दुख जच्छ कौरौ-पच्छ करतूती पैं॥

बीर-नीति पालक ह्वै ऐसी एक बालक पैं,

कीन्ही हा! अनैसी कसि कमर कपूती पैं।

सब सुर-मडल प्रचारै नभ-मंडल तैं,

धिक! धिक! ऐसी कुरुराज! रजपूती पैं॥

मङ्गल-कामना

— ० —

जाकौ सत्व अखिल-अनन्त विश्व मंडल मैं,
ब्रह्म मैं महत्व जासु वेद कहिबौ करै
'सरस' बखानै, जाहि विविध-विधान आनि,
साधक सयान लै समाधि चहिबौ करै
जड़-जग-जीवन कौं जाकी जोति जोहे बिनु,
छिन छिन मोहे महामाया गहिबौ करै
जासौं हीन ह्वै अतत्व होत तत्व सोई सत्य,
मन-बच-काय मैं हमारें रहिबौ करै

❀ ❀ ❀ ❀

परिशिष्ट
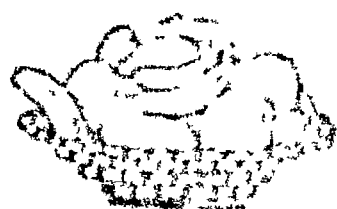
काव्य-समाप्ति

सिधि, वसु, निधि ससि विक्रमी, पौष-मकर गुरुवार।
'सरस' काव्य सकुसल भयौ, पूरन सकल प्रकार॥

परिशिष्ट

शब्दार्थ-सूची

[सम्पादक—झूमकलाल "मधुप", प्रयाग]

अ

अङ्क—उपाय, तरकीब, विधि
अनीहँ—सेना भी (अनीक)
असकुनी—बुरे लक्षण-युक्त अशकुन वाला
अन्यूह—दुरूह, कठिन
अर्भक—शिशु
अनायास—अकस्मात्
अनैसी—अनिष्ट, अप्रिय
अठानी—असङ्कल्पित, अविचारित
अरुझे—उलझे
अखडल—इन्द्र
अनुहारि—वेष-भूषा बनाना (बनक)
अमोघ—अन्यर्थ, अचूक
अनीठि—अनिष्ठ
औचकि—अकस्मात्
असनी—वज्र
अक—अकर्मण्य
अस्त व्यस्त—तितर-बितर
अवज्ञा—अपमान, तिरस्कार, निरादर, आज्ञोल्लघन
अछत—रहते हुए, मौजूदगी मे
अभिरिगो—जुट गया
अधर—बीच मे
असीत—अस्सी (८०)
अवाय—अवाक्
अभिहारी—जादूगरी
अवसान—होश हवाश

आ

आनि - आकर
आँस—आँसू

इ

इती- इतनी

उ

उसाँसनि—उच्छ्वासो
उद्र—उदर, पेट
उराई—समाप्त होना
उचारन—उच्चारण करना
उमहि—उलझ गये
उई—उदित हुई
उकसि—उठकर
उनाये—छा दिया (उनए
उदंड—कठिन

ऊ

ऊन—कम, न्यून

ओ

ओप—कान्ति, चमक, आ
ओर्यो—ओड़ना, बचाना

औ

औचक—अकस्मात्

अं

अंक—उपाय

क

कै—कर के

कान कर लीजिये—सुन लीजिये

कैतौ—यातो, अथवा

कोटि—धनुष के दोनो सिरे, करोड़ों

काल—समय, मौत

कन्दुक—गेंद

कानि—मर्य्यादा

कृपानी—तलवार

कपोती—कबूतरी

करन—हाथों

केत—पताका

कीर—तोता

करकस—कर्कश, कठोर

का-कत—क्या, कहाँ

कर—किरन, हाथ

ख

खमंडल—आकाश-मंडल

ग

गरि—गिरा देना, विनष्ट करना

गर्त—गड्ढा

गनक—ज्योतिषी

गुरू—वृहस्पति, गुरु

च

चकि—चकित होना, आश्चर्यान्वित होना

चक्र-ब्याज—सूद दर सूद और चक्रव्यूह के ब्याज (मिस) बहाने से

चंदहास—तलवार

चकायो—चकित होना

चमू—सेना

चोप—चाव, उल्लास

चल-दल-पात—पीपर का पत्ता

चामीकर—सुवर्ण, सोना

छ

छीजिए—नाश करना

छिप्र—शीघ्र

ज

जकि—जड़ीकृत होना

जीवन—पानी, प्राण

जिष्णु—इन्द्र

ज्या—प्रत्यंचा, धनुष की डोर

ज्वै—देखना, रास्ता देखना

ठ

ठहि—स्थिर हो जाना

ढ

ढिग—समीप, पास

ढारै—गिराना

त

ताकत—देखना, शक्ति

तिरै—तैरता है

तूल—रुई

तमारि—सूर्य्य भगवान

तमारिज—कर्ण—(सूर्य्य-पुत्र)

तमाई—ताँबापन

तच्छक—सर्प

थ

थरकन लागी – फड़कने लगी
थहरि – काँपना
थिरि—स्थिर

द

[द]ुरन्त – बुरे परिणाम वाला, कुफलप्रद
दच्छ—चतुर
दरि—नाश करना, दलित करना, दरना
देवगायकास्त्र-(देव+गायक+अस्त्र) अर्थात् गंधर्व-अस्त्र

ध

धनञ्जय अग्नि, अर्जुन
धूम – धुँआ, धूमधाम
ध्वस्त—नष्ट, विध्वस

न

नैसुक - थोडा सा, तनिक
नातरु – नही तो, अन्यथा
निधन—मरना, उऋण करना
नहिगे—झुकना, नमित होना
नाराच—वान
नीठि—निश्चय
निषग – तरकस

प

पार परिहै – सिद्धि प्राप्त होगी
पारथ—पार्थ – अर्जुन
पँवारे—फेकना
प्रतिकूल—वैरी, प्रत्येक कूल (नदी का किनारा)
प्रभजन—वायु, नाश करना
पग पारै—पैर रखना
प्रतिभात—ज्ञात या प्रतीत होना
परावै है—पलायमान होना, भागना
प्रतिहत—टकराकर
पुरहूत – इन्द्र
पति—लज्जा
पूत—पवित्र, पुनीत, पुत्र
पीन—स्थूल
पर्न—पत्ता (पर्ण)
पानि – हाथ (पाणि)
परिकर—कमर

व

विथकित—वहुत थकी हुई, श्रमित
विधायक—विधानकर्ता
विग्रही—शरीर वाला, लड़ाकू
विसूरति--स्मरण करना, पछताना, सोचना
वमकत—वमकते हुए, प्रलाप करते हुए
वादि—छुडाना
वैस – उम्र
वात—हवा, वातचीत
वानि – आदत, स्वभाव
विपच्छिन—पक्षियों
विसिख—वान
विसिखासन – (विसिख+आसन) धनुष
वाहिनी—सेना, नदी
व्योंत—उपाय
वायस—कौवा, (वाइस, २२)

वितुंड—हाथी

भ

भटमानी—वीर मानने वाला
भूरि—बहुत
भारती—सरस्वती जी
भौचकि—भ्रम मे पड़े हुए
भुराये—भूले हुए
भाथ—तरकस
भाय—भाव
भद्र—अच्छे, श्रेष्ठ

म

मंत्रणा—सलाह, परामर्श
मसक—मच्छड़
मातुल—मामा (श्रीकृष्ण)
मुंडमाली—शङ्कर जी
माखौ—क्रोध करना
मोचत—छोडते हुए
मन्यु—क्रोध
मतगज—हाथी का बच्चा

य

यन्त्रणा—यातना, दुःख
यान—रथ

र

रङ्क—गरीब, दीन
रुद्र—भयङ्कर, शङ्कर
रद—ओंठ
रोचनि—रुचना, अच्छा लगना
रुक्म—सोना, सुवर्ण
रारि—लड़ाई
रन-ध्वनि } -(रन=समर+
रणाध्वनि } -ध्वनि=मार्ग मे
अर्थात् रण-पथ मे
रई—मथानी

ल

लेखा—हिसाव
लच्छ—लक्ष्य, निशाना, लाखो

स

ससक—खरगोश
सक्र—इन्द्र
सव्यसाची—अर्जुन
समन्यु—सक्रोध
सची—इन्द्रानी
सकाई—सशङ्कित होना
सावक—बच्चा
स्यदन—रथ
सैलजा-सुनन्दन—स्वामिकार्तिके
सारन—निकालना
सुपानी—सुन्दर हाथ
स्रौन—कान, श्रुति
सारदूल—सिंह
सावक—बच्चा
सायक—वाण
सूर सरकस—शूर-वीर

ह

हरुवौ—हलका
हुतासन—अग्नि

त्र

त्रपा—लज्जा
त्रस्त—त्रसित